डी. जयकांतन

D. Jayakanthan

श्री डी. जयकांतन, जिन्हें साहित्य अकादेमी आज अपने सर्वोच्च सम्मान, महत्तर सदस्यता, से विभूषित कर रही है; तमिष़ के सर्वाधिक प्रसिद्ध कथाकारों में से हैं और पिछले चार दशकों से भी अधिक समय से भारतीय साहित्य परिदृश्य में अपनी उपस्थिति का अहसास करा रहे हैं।

कूड्डल्लूर के एक मध्यवर्गीय परिवार में 1934 में जन्मे जयकांतन ने 1946 में घर छोड़ दिया और अंततः तत्कालीन अविभाजित भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के दफ़्तर में आ गये। पार्टी, घर के साथ आपका विद्यालय भी बनी। पार्टी में आपको कम्पोज़िटर, मुद्रक और प्रोड्यूसर के रूप में प्रशिक्षित किया गया और पोस्टर चिपकाने, सभाएँ और रैलियाँ आयोजित करने-जैसे सभी तरह के कार्यों में लगाया गया। जीवानंदम्, मोहन कुमारमंगलम, बालदण्डायुतम-जैसे राजनीतिक और सामाजिक नेताओं की संगति और दूसरों ने आपको एक नयी दृष्टि और मनुष्य तथा समाज का नया परिप्रेक्ष्य दिया।

यद्यपि आपकी औपचारिक शिक्षा-दीक्षा नहीं हुई, लेकिन विद्वान बी.सी. लिंगम्-जैसे विद्वानों के कारण आपको बेहतर शिक्षा मिल सकी, जिन्होंने आपको तमिष़ पढ़ाया। *डिस्कवरी ऑफ़ इंडिया* पढ़ कर आपने अंग्रेज़ी का ज्ञान प्राप्त किया और आपका मानना है कि नेहरू ही अंग्रेज़ी और इतिहास के आपके शिक्षक हैं। जयकांतन नेहरू और गाँधी के राष्ट्रीय आदर्शों की तरफ़ काफ़ी आकर्षित रहे। आपका विश्वास है कि सुब्रह्मण्य भारती के विचार नेहरू के निकट हैं और नेहरू के विचार बुद्ध के निकट। ये महान प्रतिभाएँ थीं, जिन्होंने जयकांतन के बौद्धिक दृष्टिकोण को आकार दिया। पार्टी के सतत् कार्यों के बीच आप एक ग्रामीण लेखक के रूप में उभरे।

प्रसिद्ध कथाकारों पुदुमैपित्तन और कु. अलगिरिस्वामी की शैली ने जयकांतन को प्रभावित किया, जो उस समय तक तमिष़ साहित्य के स्वातंत्र्योत्तर युग में निर्विवाद व्यक्तित्व बन चुके थे।

जयकांतन के चालीस उपन्यास, लगभग दो सौ कहानियाँ और पंद्रह निबंध-संग्रह प्रकाशित हैं। इसके अतिरिक्त आपने कुछ अनुवाद भी किये हैं। रोमां रोलां कृत महात्मा गाँधी की जीवनी का आपने तमिष़ अनुवाद किया है। दो आत्मकथात्मक कृतियों में आपने राजनीति और कला-क्षेत्र से सम्बन्धित अपने अनुभवों का वर्णन किया है। अपनी गैर-पारम्परिक कहानियों और उपन्यासिकाओं से लोकप्रिय पत्रिकाओं में आपने तूफ़ान खड़ा कर दिया था। आपने महत् अंतर्दृष्टि के साथ मानव-व्यवहार की सूक्ष्म जटिलताओं को समझा और गहरी समझ के साथ उनका चित्रण किया। अपनी अनेक कृतियों में आपने महिलाओं की समस्याओं को

SRI D. Jayakanthan on whom the Sahitya Akademi is conferring its highest honour of Fellowship today is one of the most distinguished fiction writers in Tamil who has been making his presence felt in Indian literature for more than four decades.

Born in a middle class family at Cuddalore in 1934, Jayakanthan left home in 1946 and finally landed in the office of the then undivided Communist Party of India. The party became his home as well as school. The party trained him as compositor, printer and producer and set him on all kinds of odd jobs like pasting posters, organizing meetings and rallies. Life in the company of political and social leaders like Jeevanandham, Mohan Kumaramangalam, Baladandayutham and others gave him a new vision, a new perspective on man and society.

Though he had no formal schooling, he had better education because of guides like Vidwan B.C. Lingam who taught him Tamil. He acquired English through the reading of the *Discovery of India* and claims that Nehru was his teacher of English and History. Jayakanthan was strongly attracted towards the nationalistic ideals of Nehru and Gandhi. He believes that Subramania Bharati's ideology was closer to that of Nehru and Nehru's ideas were nearer to the Buddha's. These were the great minds that shaped the intellectual outlook of Jayakanthan. In the midst of hectic party activities, he blossomed into an accomplished writer.

The style of Puthumaipithan and Ku. Alagiriswamy, veteran short story writers influenced JK, who in course of time became the undisputed figurehead of the post-Independence era of Tamil Literature.

He has to his credit about forty novels, nearly two hundred short stories and fifteen collections of essays besides some translations. Romain Rolland's biography of Mahatma Gandhi was translated by him into Tamil. He has narrated his experiences in the areas of politics and arts in two autobiographical volumes. He stormed the popular magazines with his unconventional short stories and novelettes. He grasped the subtle complexities of human behaviour with great insight and portrayed them with deep understanding. He daringly deals with the problems of

साहसपूर्वक उठाया है। धनवान और ग़रीब के मध्य के अंतर का वर्णन करने में आप निष्णात हैं। आपका यह दावा कि आपकी कहानियाँ 'समस्याओं की समस्या' का चित्रण करती हैं, बिलकुल ठीक है।

नंदनवनत्तिल ओरु आंडी (बग़ीचे में फ़कीर) आपकी प्रारम्भिक कहानियों में से है और इसने आपको अपना लेखन जारी रखने के लिए आत्मविश्वास दिया था। *नान इरुक्किनड्रेन* (मैं ज़िन्दा हूँ)-जैसी कहानियाँ जहाँ प्रत्येक पाठक द्वारा सराही गयीं, वहीं *इरुलै तेडी* (अँधेरे की तलाश में)-जैसी कहानियों ने समाज को झटका दिया। *नान एन्न चेयट्टुम सोल्लुंगो* (बताओ, मैं क्या करूँ) में आम जनता की तेज़ी से धन इकट्ठा करने की पागल लिप्सा का चित्रण है। *सूय दरिसनम* (आत्म-दर्शन) कहानी लिखने के बाद, जिसमें आपने स्वयं की एक ब्राह्मण के साथ शिनाख़्त की है, आपने ब्राह्मण समाज से बड़े विरोध की आशंका की थी, लेकिन विरोध के बदले इसने जयकांतन में ब्राह्मण समाज के विश्वास को नवीकृत किया। *ओरु पकल नेरप्पैसेंजर वण्डी* (दिन में चलने वाली पैसेंजर ट्रेन में) में एक ब्राह्मणी मरते समय अपने बच्चे को निम्न जाति के एक बूढ़े को सौंप जाती है और अपने मरने के बाद क्रिया-कर्म करने का उससे अनुरोध करती है। बूढ़ा आदमी ऐसा ही करता है। जयकांतन का कहना है कि वह पालतू पशुओं को पसंद नहीं करते हैं, लेकिन *निक्की* और *अग्रहारत्तिल पूनै* (ब्राह्मण गली में बिल्ली)-जैसी कहानियाँ पशुओं के प्रति उनके छिपे प्रेम को प्रकट करती हैं।

1954 में प्रकाशित *अग्निप्रवेशम* ने प्रमुख तमिष़ समाचार पत्रों में काफ़ी हलचल मचायी और इस विवाद ने आपको उपन्यास *सिल नेरंगलिल* सिल मनितरगळ् (कुछ क्षणों में कुछ व्यक्ति) लिखने को प्रेरित किया। इस उपन्यास को 1972 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अपने यथार्थवाद, आख्यान और विभिन्न परिस्थितियों के चित्रण के कारण यह कृति समकालीन तमिष़ साहित्य को महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गयी। जब आपकी पटकथा और गीतों के साथ यह फ़िल्मायी गयी, जयकांतन को 1978 में तमिलनाडु सरकार का श्रेष्ठ कथा पुरस्कार प्राप्त हुआ। नर-नारी सम्बन्धों के अपने खुले और यथार्थ चित्रण के कारण इस उपन्यास ने तमिष़ समाज में एक विवाद को जन्म दिया।

गंगै एंगे पोकिराल (गंगा कहाँ जा रही है?) उपर्युक्त उपन्यास की उत्तर कथा है। लेखक ने अपनी पात्र गंगा को इस उपन्यास में पुनर्प्रतिष्ठित किया है और उसे एक उत्तरदायी महिला बनाया है—उस व्यक्ति की एक अच्छी साथी, जिसने उसका जीवन विनष्ट किया।

सुंदर कांडम् में नायिका स्वयं को आर्थिक और सामाजिक पीड़न की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए संघर्ष करती है। इस उपन्यास को 1986 में तमिष़ विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित राजा राजन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उसी वर्ष उपन्यास *जय जय शंकर* के लिए आपको तमिलनाडु सरकार का श्रेष्ठ उपन्यास पुरस्कार प्राप्त हुआ। *ओरु मनितन, ओरु वीडु, ओरु उलगम* (एक आदमी, एक घर और एक दुनिया) में जयकांतन सार्वभौम मानवतावाद का प्रचार करते हैं।

1964 में आपने फ़िल्म-क्षेत्र में जाने का जोख़िम उठाया। अब तक आपकी लगभग 10 कृतियों पर फ़िल्में बन चुकी हैं। आपने *उन्नैपोल ओरुवन* (तुम्हारे जैसा कोई) का निर्देशन और निर्माण किया, जिसे राष्ट्रपति का उत्कृष्टता प्रमाण पत्र मिला। आपने कई अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्मोत्सवों में भाग लिया। दो अन्य फ़िल्मों *यारुक्काग अषुदान* (वह किसके लिए रोया?) और *पुदु चेरुप्पु कडिक्कुम* (नया जूता काटता है) भी आपने निर्देशित

women in many of his works and is a master when it comes to narrating the differences between the rich and the poor. His claim that his short stories deal with the "problem of problems" is quite appropriate.

Nandavanathil Oru Andi (A Fakir in the Garden), one of his earlier stories, gave him self-confidence to continue writing. While stories like *Naan Irukkindren* (I am alive) were appreciated by everyone, those like *Irulai Thedi* (In Search of Darkness) gave a shock treatment to society. *Naan Enna Cheyyattum Sollungo?* (Tell me what I shall do) depicts the mad greed of the common folk to earn a fast buck. After writing the story *Suya Darisanam* (Self-realisation) where he identifies himself with a Brahmin, Jayakanthan anticipated strong protest from the Brahmin community. Instead of protest, it renewed Brahmin community's confidence in Jayakanthan. In *Oru Pakal Nerap Passenger Vandi* (In a Day-Passenger Train) a Brahmin woman, while dying, leaves her child in the custody of a low caste old man and requests him to perform the funeral rites on her death. The old man does so. JK says that he doesn't like pets, yet his stories like *Nikki* and *Agraharathil Poonai* (Cat in a Brahmin Street) bring out his hidden love for animals.

Agnipravesam published in 1954 created a furore in major Tamil newspapers and the controversy led him to write the novel *Sila Nerangalil Sila Manithargal* (Some People at Some Moments) which won the Sahitya Akademi Award in 1972. For its realism, narration and depiction of individuals in various circumstances, this work has been hailed as an outstanding contribution to contemporary Tamil literature. When it was filmed with his screenplay and lyrics, Jayakanthan won the Best Story Award from the Government of Tamil Nadu in 1978. The novel created a controversy in the Tamil society because of its uninhibited and realistic portrayal of man-woman relationship.

In Gangai Enge Pokiral (Where is Ganga going?) a sequel to the above novel, the author rehabilitated the character Ganga and made her a responsible woman, a good friend of the person who had shattered her life.

In *Sundara Kandam* the heroine struggles to free herself from the shackles of economic and social oppression. The novel won him the prestigious Raja Rajan Award from the Tamil University in 1986. In the same year the novel *Jaya Jaya Sankara* got him the best novel award from the Government of Tamil Nadu. In *Oru Manithan, Oru Veedu, Oru Ulagam* (A Man, a House and a World)) Jayakanthan propagates universal humanism.

In 1964 he ventured into films. About ten of his works have so far been made into films. He directed and produced *Unnaipol Oruvan* (One like You) which won the President's Certificate of Merit and participated in several International Film Festivals. *Yarukkaga Azhudhan* (For whom did he weep?) and *Pudu Cheruppu Kadikkum* (New Shoe Pinches) were two other films directed by him. JK also actively involved himself in *Karunai Ullam* (Tender Heart),

की। जयकांतन ने स्वयं को *करुणै उळ्ळम* (कोमल हृदय), *ओरु नडिगै नाटकम पारकिराल* (एक अभिनेत्री देखती है नाटक), *कावल दैवम* (रक्षक) और *एत्तनै कोणम एत्तनै पारवै* (अनेक कोण, अनेक दृष्टियाँ) में संलग्न कर रखा है। आपकी तीन कृतियाँ छोटे परदे पर भी आ चुकी हैं।

जयकांतन की कृतियों के लगातार पुनर्मुद्रण इस बात को सिद्ध करते हैं कि आपकी पूर्ववर्ती कृतियाँ और बाद की कृतियाँ समान रूप से लोकप्रिय हैं।

योसिक्कुम वेलाइयिल (विचार करते समय) को समालोचक तमिष़् के उत्कृष्ट कथात्मक लेखन में से एक मानते हैं। लेकिन जयकांतन एक मुस्कान के साथ कहते हैं, "मैं उन्हें कैसे समझाऊँ? वे भी कहानियाँ हैं।"

आपकी कई कृतियाँ प्रमुख भारतीय भाषाओं और अंग्रेज़ी, रूसी, जर्मन, जापानी और यूक्रेनी-जैसी विदेशी भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं।

एक समय कम्पोज़िटर रहे जयकांतन आज सम्पादक बन चुके हैं। आपने *जयबेरिकै, नवशक्ति* समाचार पत्रों और साहित्यिक पत्रिकाओं *ज्ञानरथम* और *कल्पना* का सम्पादन किया है।

आज तमिलनाडु में दण्डपाणि जयकांतन एक परिचित नाम है, जो कथा-साहित्य की स्थापित परम्पराओं और निषेधों की स्वस्थ आलोचना करने वाले श्रेष्ठ यथार्थवादी के रूप में प्रसिद्ध है।

तमिष़् में एक कथाकार के रूप में अपने उत्कर्ष के लिए साहित्य अकादेमी, डी. जयकांतन को अपने सर्वोच्च सम्मान, *महत्तर सदस्यता*, से विभूषित करती है। □

Oru Nadigai Natakam Parkiral (An Actress Watches a Play), *Kaval Deivam* (Protector) and *Ethanai Konam Ethanai Paarvai* (Many Angles, Many Views). Three of his works have been successfully adapted to the little screen.

The continuous reprints of JK's works, prove that his earlier writings and the latter ones are equally popular.

Yosikkum Velaiyil (While Thinking) has been hailed by critics as one of the best non-fiction pieces of writing in Tamil. But Jayakanthan asks with a smile, "How can I tell them? They are also short stories."

Some of his works have been translated into major Indian languages and into foreign languages like English, Russian, German, Japanese and Ukrainian.

The one time compositor Jayakanthan rose to become Editor Jayakanthan when he took over the editorship of the daily newspapers *Jayaberikai, Nava Sakthi* and literary journals *Gnanaratham* and *Kalpana.*

Dandapani Jayakanthan is now a household name in Tamil Nadu, having established his reputation as a realist par excellence with a healthy disregard for the established conventions and taboos of fictional literature.

For his eminence as a fiction writer in Tamil, the Sahitya Akademi confers its highest honour, the Fellowship on D. Jayakanthan. □